[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्षः 70 अंक : 1
सृष्टि संवत् 1960853113
7 अप्रैल 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 1, 4/7 अप्रैल 2013 तदनुसार 25 चैत्र सम्वत् 2069 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आर्य समाज का स्थापना दिवस

–श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य समाज अपने जीवन के 138 वर्ष पूरे कर रहा है और इन गत वर्षों में आर्य समाज ने बहुत बड़ी उन्नति की है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिन उद्देश्यों को लेकर आर्य समाज स्थापित किया था आर्य समाज ने उसे पूर्ण किया है और आज भी आर्य समाज उन्हीं उद्देश्यों को लेकर आगे बढ़ रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश में बढ़ती हुई कुरीतियों, अंधविश्वासों, छूआछूत और आपस में बढ़ते हुये जातिवाद तथा वैमनस्य को देख कर यह निश्चय किया था कि मैं इस देश में एकता उत्पन्न करके सभी को एक ईश्वर के उपासक बना कर हर प्रकार के अंधविश्वासों और कुरीतियों को दूर करूंगा। इसके साथ ही उन्होंने जहां भी कोई किसी प्रकार की कमी देखी, चाहे वह स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में थी, चाहे वह अछूतों के सम्बन्ध में थी, चाहे विधवाओं के सम्बन्ध में थी या फिर वह अनाथों के सम्बन्ध में थी जहां भी उन्हें किसी प्रकार की कमी नजर आई तो उसे दूर करने का प्रयास किया। वह चाहते थे कि हमारा देश बहुत उन्नति करे, विदेशियों की गुलामी की जंजीर को तोड़ कर स्वतंत्र होकर ऊंचा उठे। उन्होंने इसके लिये अपना सारा जीवन लगा दिया और जब उन्होंने देखा कि अभी भी यह कार्य अधूरा है तो इसे पूरा करने के लिये आर्य समाज की स्थापना कर दी। आर्य समाज कोई धर्म नहीं, कोई सम्प्रदाय नहीं, कोई मजहब नहीं, कोई मत नहीं। यह तो एक आन्दोलन है जो देश में बढ़ती हुई कुरीतियों और बुराइयों के विरुद्ध आरम्भ किया गया था और आज भी वह अपना कार्य निरन्तर कर रहा है। जहां कहीं भी किसी प्रकार की कमी नजर आती है तो आर्य समाज वहां खड़ा हो जाता है। देश की आजादी से लेकर देश के निर्माण तक जहां जहां भी आर्य समाज की आवश्यकता पड़ी वहां वहां आर्य समाज तथा आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने आगे बढ़चढ़ कर कार्य किया।

शिक्षा के क्षेत्र में तो आर्य समाज आज भी सबसे आगे है। जितनी शिक्षा संस्थाएं हमारे देश में आर्य समाज की हैं उतनी किसी और संस्था की नहीं हैं। आर्य स्कूल, आर्य कालेज, आर्य माडल स्कूल, दयानन्द पब्लिक स्कूल और डी.ए.वी. स्कूल एवं डी.ए.वी. कालेजों का सारे देश में एक जाल सा बिछा हुआ है बल्कि अब तो विदेशों में भी आर्य समाज की कई शिक्षा संस्थाएं सुचारू रूप से चल रही हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने चैत्र सुदी प्रतिपदा 7 अप्रैल 1875 को आर्य समाज की स्थापना की थी। इसलिये आर्य समाज के लिये यह दिन ऐतिहासिक दिन है। नव संवतसर आरम्भ होने के कारण नव वर्ष है। इस बार यह दिन 11 अप्रैल 2013 वीरवार को आ रहा है। प्रत्येक आर्य समाज में इस दिन समारोह होना चाहिये। प्रत्येक आर्य समाज को अपनी वर्ष भर की उपलब्धियों पर विचार करना चाहिये। अपने कार्य का लेखा जोखा करना चाहिये इसलिये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजें 11 अप्रैल 2013 को इस दिन को समारोहपूर्वक मनाएं। नव वर्ष के रूप में मनाएं और आर्य समाज स्थापना दिवस के रूप में मनाएं। इसके साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित प्रत्येक शिक्षण संस्था में भी इस दिन को समारोहपूर्वक मनाया जाये। प्रत्येक स्कूल व कालेज में आर्य समाज की स्थापना के सम्बन्ध में नये वर्ष संवतसर के सम्बन्ध में विद्यार्थियों को जानकारी दी जाये ताकि हमारी आर्य शिक्षा संस्थाओं में पढ़ने वाला प्रत्येक विद्यार्थी इस बात को जान सके कि इसका महत्व क्या है।

नवसंवत-नव वर्ष के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई

नववर्ष–नवसंवतसर 2070 चैत्र सुदी प्रतिपदा दिनांक 11 अप्रैल 2013 से आरम्भ हो रहा है। सृष्टि संवत 1960853114 के शुभ अवसर पर तथा विक्रमी संवत 2070 के शुभारम्भ पर हम आर्य मर्यादा के सभी पाठकों, आर्य समाजों व आर्य शिक्षा संस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, प्रिंसीपलों, अध्यापकों, प्राध्यापकों तथा सभी आर्य बन्धुओं व आर्य बहनों को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से, आर्य विद्या परिषद पंजाब की ओर से व गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की ओर से हार्दिक शुभ कामनाएं भेंट करते हैं व हार्दिक बधाई देते हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

सुदर्शन कुमार शर्मा सभा प्रधान एवं चांसलर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार	प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री
सुधीर कुमार शर्मा सभा कोषाध्यक्ष	अशोक पुरुथी एडवोकेट रजिस्ट्रार आ.वि.परिषद

समस्त अधिकारी व अन्तरंग सदस्य

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन

चौक किशनपुरा जालन्धर।

आज की बड़ी चुनौती है कि वैदिक संस्कृति की रक्षा कैसे करें

-ले० पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक उत्तराखण्ड

आज जब अंग्रेजों को भारत छोड़े-68 वर्ष हो गये है, उनके जाते ही उनकी पाश्चात्य संस्कृति को भी चला जाना चाहिए था किन्तु वह भारत पर और प्रभावी हो गयी। कारण हमने अंग्रेजों को भगाने के लिए आन्दोलन तो किया किन्तु पाश्चात्य संस्कृति को भगाने के लिए कुछ नहीं किया, अपितु पाश्चात्य संस्कृति को अपना कर भारतीयों ने अपने रग-रग में समा लिया। आज पाश्चात्य संस्कृति व संस्कारों ने हमारी वैदिक संस्कृति को अधमरा कर दिया है। वैदिक संस्कृति की रक्षा करना आज हमारी सबसे बड़ी चुनौती बन गयी हैं। भारत विश्व गुरू बनने की बजाए, पाश्चात्य संस्कृति का गुलाम बन गया है।

युग पुरूष महर्षि दयानन्द ने इस चुनौती को स्वीकार करके वैदिक आर्ष संस्कृति को पुन: जीवित करने के लिए अपना बलिदान कर दिया था। आज उनके द्वारा बनाया गया आर्य समाज वैदिक संस्कृति को पुन: जीवित करने के लिए उसमें प्राण फूंक रहा है।

वास्तव में हम भारतीयों ने अंग्रेजों से नफरत तो की पर उनके द्वारा लार्ड मैकाले की शिक्षा को स्वीकार कर लिया और अपने जीवन में पाश्चात्य संस्कृति को अपना अंग बना लिया। फलस्वरूप पाश्चात्य संस्कृति आज हमारे घरों के चूल्हों तक पहुंच गयी है।

इतिहास देखने से प्रतीत होता है कि भारत की संस्कृति पाँच हजार पूर्व से संसार के अनेक संस्कृतियों के सम्पर्क में आई किन्तु प्रतिस्पर्धा की जगह अन्य संस्कृतियों को आत्मघात कर गई। या अन्य संस्कृति इसके सामने विलीन हो गयी। ऐसा समय कभी नहीं आया कि वैदिक संस्कृति ने अपना अस्तित्व खो दिया है या लुप्त हो गयी हो। स्पष्ट है भारतीय वैदिक संस्कृति ईश्वरीय वाणी वैदिक धर्म पर टिकी है और इसी कारण अपनी पहचान न खो सकी। क्योंकि संस्कृति आध्यात्य है और सभ्यता भौतिक है सभ्यता आगे-आगे विकसित होती है और संस्कृति अपनी पहचान बनाये रखती है।

भारतीय संस्कृति कई संस्कृतियों के सम्पर्क में आई कभी मुगलों के कभी अंग्रेजों के सम्पर्क में आई, सभी ने इसको रौंदने का कार्य किया, किन्तु भारतीय संस्कृति झुकी नहीं अपितु अन्य संस्कृतियों को प्रभावित करती रही। यही कारण है आज विश्व में अनेक संस्कृतियां जो उत्पन्न हुई थी उनका नाम लेवा भी नहीं है। एक भारतीय संस्कृति ही ऐसी है जो विगत पाँच हजार वर्षो से अनेक संकटों से जूझते हुए भी आज तक जीवित है।

भारतीय संस्कृति में भारत में मुसलमानों के आने से उन्हें मलेच्छ कहते थे और उनके साथ खान-पान व अन्य कृत्य अधर्म समझते थे, क्योंकि मुसलमान भारत में लुटेरे बनकर आये थे, तथा अपने धर्म को तलवार के बल पर मनवाने को भारतीयों को विवश करते थे अत्याचार करते थे। किन्तु उनके क्रूर अत्याचार के बाद भी मुस्लिम संस्कृति भारतीय संस्कृति में अपना प्रभाव न डाल सकी। और अंग्रेज भारत में व्यापार करने आये थे, अपनी संस्कृति का प्रचार करने नहीं आये थे। किन्तु उनकी संस्कृति भारतीयों के संस्कारों में बसती चली गई। मैं इसके कई कारण समझता हूँ कि भारत की सामाजिक व्यवस्था शोषण प्रवृत्ति की थी सामन्तशाही हुकूमत करते थे, भयंकर जातीवाद, छुआछूत, धार्मिक अन्ध विश्वास, अनेक पाखण्डों से समाज ग्रस्त हो रखा था। पाश्चात्य संस्कृति में भारत के शोषित व शोषण वर्ग को अपना-2 लाभ दिखाई दिया और वह पाश्चात्य संस्कृति में डूबते चले गये।

यह भी कटु सत्य है हम अंग्रेजों को चाहे कितना बुरा बताऐं किन्तु उनके आने से भारत में अनेक पाखण्ड समाप्त भी हुए। अंग्रेजों की संस्कृति धर्म पर आधारित नहीं थी भारत की संस्कृति का आधार आध्यामिकता और पाश्चात्य संस्कृति का आधार लौकिक था। हम पहले कह चुके है कि भारतीय संस्कृति अनेक हमलों के बाद भी यथावत रही और जो संस्कृति अंग्रेजों के आने के बाद भी मरते-मरते जीवित थी वहीं संस्कृति अंग्रेजों के चले जाने के बाद मुर्दे के रूप में दिखाई देती है। आज हम अपनी संस्कृति का नाम तो लेते है पर जीवन में उतारने को तैयार नहीं है। हम अपने को धोखा दे रहे हैं। मुर्दा भारतीय संस्कृति से चिपके मात्र है। आज पाश्चात्य संस्कृति को हम अपनी वैदिक संस्कृति से बलवती मान रहे है।

यदि जितना परिश्रम हमने अंग्रेजों को निकलने में किया उसका आधा भी अपनी भारतीय वैदिक संस्कृति को बचाने में करते तो आज यह स्थिति नहीं होती। वास्तव में भारतीय धर्माचार्यों ने संस्कृति का प्रचार तो किया किन्तु दुकानदारी व स्वार्थ के रूप में वैदिक संस्कृति के टुकड़े-टुकड़े करके अनेक रूप में भारतीयों को परोसा। और भारत के बुद्धि-जीवियों व युवा वर्ग दिशाहीन होकर सत्यमार्ग न मिलने के कारण उधर ही झुकता चला जा रहा है। यही कारण है आज विदेशों में नाच गाने को संस्कृति समझ लिया है। भारत में भी धार्मिक अन्ध-विश्वास, सामाजिक कुरूतियों, व रूढ़ी परम्पराओं व काल्पनिक मान्य-ताओं को संस्कृति का नाम दिया जा रहा है। संस्कृति का वास्तविक स्वरूप ईश्वरीय धर्म ईश्वरीय सृष्टिक्रम व ईश्वरीय संविधान वेदों की मान्यता है।

सुझाव:

1. आर्य समाज के विशाल संगठन को आपसी मतभेद भुला कर, भारतीय वैदिक संस्कृति को बचाने के लिए आन्दोलित होना पड़ेगा।

2. आर्य समाज को भारत की शिक्षा पद्धति में वैदिक आर्षग्रन्थों का व सत्यार्थ प्रकाश के दस सम्मुलासों को पाठयक्रम में अनिवार्य कराना पड़ेगा।

3. राजनीति में आर्य विद्वानों को अधिक से अधिक प्रवेश कराना पड़ेगा।

4. आर्य नेतृत्व को अनिवार्य करना पड़ेगा कि प्रत्येक आर्य परिवारों से एक बच्चा गुरूकुल में अवश्य प्रवेश करायें।

5. भारत वर्ष में समय-समय पर जो ज्वलन्त समस्यायें पैदा होती रहती है उन समस्याओं को एक रूपता में उठाकर आन्दोलन करना पड़ेगा। मीडिया को आधार बनाना पड़ेगा।

अन्त में मुझे यह कहना है कि विश्व में वैदिक आर्ष संस्कृति को केवल आर्य समाज संगठन ही बचा सकता है। यदि हम आर्य सोते रहे तो आने वाला कल ऐसा भी आ सकता है कि भावी पीढ़ी को वैदिक संस्कृति की एक झलक देखने को भी तरसना पड़े। आइए अपनी वैदिक आर्य संस्कृति को बचाने के लिए हम सजग हो जाऐं।

चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज वेद मन्दिर गान्धी नगर-2, जालन्धर में श्री बुटी राम जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज का चुनाव सर्वसम्मति से हुआ जिसमें प्रधान सूबेदार अमर नाथ जी को चुना गया और कार्यकारिणी में सीनियर उप प्रधान श्री सुभाष भगत जी को बनाया गया। उप प्रधान श्री कमल कुमार, महामन्त्री श्री जगदीश कुमार, सहमन्त्री श्री रविन्द्र कुमार, कैशियर श्री तारा चन्द जी को बनाया गया। राज कुमार, अशोक कुमार जी, जोगिन्द्र पाल जी, पं० श्री कृष्ण कुमार जी सुरजीत जी राम लुभाया को कार्यकारिणी सदस्य बनाया गया।

-महामन्त्री जगदीश कुमार

सम्पादकीय......

नव संवतसर की हार्दिक बधाई

मानव जीवन में प्रत्येक सैकेंड प्रत्येक मिनट, प्रत्येक घंटे, प्रत्येक सप्ताह, प्रत्येक माह और प्रत्येक वर्ष का बहुत बड़ा महत्व होता है। समय बहुत मूल्यवान है और वहीं व्यक्ति जीवन में आगे बढ़े हैं जिन्होंने समय के महत्व को समझा है। क्योंकि जो समय चला जाता है वह फिर वापस नहीं आता। समय निरन्तर आगे बढ़ता है और पीछे मुडकर नहीं देखता। इसलिये वेद ने कहा है कि कालो अश्वो वहति अर्थात् आपने कभी रेस के घोडों को देखा होगा उनके पांव दौड़ते समय एक सैकेंड ही जमीन पर टिकते हैं, निरन्तर ऊपर ही उठते रहते हैं। संसार के सभी पशुओं में घोड़ा सबसे तेज दौड़ता है और वह स्वयं ही नहीं दौड़ता अपने सवार को भी अपने ऊपर बैठा कर दौड़ता है। वह स्वयं तो अपनी मंजिल पर पहुंचता ही है परन्तु साथ ही अपने सवार को भी मंजिल पर पहुंचा देता है। तेज घोड़े पर सवार व्यक्ति सबसे आगे बढ़ जाता है, आगे निकल जाता है इसलिये समय का प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान रखना चाहिये और अपने सभी कार्य समय पर करने चाहिये।

एक वर्ष बीत जाने पर जब दूसरा वर्ष आरम्भ होता है उसे नया वर्ष कहा जाता है। नये दिन से ही नया वर्ष आरम्भ होता है। नया वर्ष आरम्भ हुये 1960853113 वर्ष हो गये हैं। यह सृष्टि संवत हैं अर्थात सृष्टि को बने 1960853113 वर्ष बीत चुके हैं। चैत्र सुदि प्रथमा अर्थात 11 अप्रैल 2013 से 1960853114वां वर्ष आरम्भ हो जाएगा। महाराजा विक्रमादित्य से इस वर्ष की नवीन गणना आरम्भ हुई है। इस दिन उनको हुये 2069 वर्ष पूरे हो गये हैं और 2070 वर्ष चैत्र सुदि प्रथमा अर्थात 11 अप्रैल 2013 से आरम्भ हो रहा है। यही हमारा नया वर्ष है।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने भी इसी सृष्टि संवत व विक्रमी संवत को महत्व दिया है। इस दिन के महत्व को समझते हुये उन्होंने चैत्र सुदी प्रतिपदा तदनुसार 7 अप्रैल 1875 को मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। यह दिन आर्य समाज का स्थापना दिवस भी है। हमारे देश में किसी भी कारोबार करने वाले जो लोग अपने बही खाते लगाते थे, वह भी इसी दिन से अपने नये बही खाते आरम्भ करते थे। हमारा देश लगभग एक हजार वर्ष गुलाम रहा परन्तु हमने अपने बही खातों का समय नहीं बदला। गुलामी में भी हमारे देश के व्यापारी व कारखानेदार लोग चैत्र सुदी प्रतिपदा से ही अपने कारोबारी बही खाते आरम्भ करते रहे। किसी ने भी प्रथम जनवरी से अपना बही खाता आरम्भ नहीं किया जबकि अंग्रेजों की देखा देखी हमारे देश के लोग भी प्रथम जनवरी को ही नया वर्ष मानने लग गये हैं परन्तु बही खातों के लिये अब तक प्रथम जनवरी को स्वीकार नहीं किया।

आजादी के बाद से आज तक भी हमारे देश में कोई भी कारोबारी व्यक्ति प्रथम जनवरी से अपना बही खाता आरम्भ नहीं करता। अब एक अंग्रेजी तिथि ही हमारी सरकार ने आरम्भ कर दी है। वह है प्रथम अप्रैल। अब हमारे देश का कारोबारी वर्ष 31 मार्च को समाप्त होता है और प्रथम अप्रैल को आरम्भ होता है। यह दिन चैत्र सुदी प्रतिपदा के ही दिन है। नव संवतसर के ही दिन है क्योंकि चैत्र सुदी प्रतिपदा नव संवतसर लगभग इन्हीं दिनों में आता है।

हम अपना कारोबारी नव वर्ष जब प्रथम जनवरी को नहीं मनाते तो हम प्रथम जनवरी को नव वर्ष क्यों मनाते हैं? क्यों इस दिन ही नव वर्ष की मित्रों को बधाईयां देते हैं। यदि हमारे देश में प्रथम जनवरी का महत्व होता तो हमारा कारोबारी नव वर्ष भी प्रथम जनवरी से ही आरम्भ होना चाहिये था। इससे स्पष्ट होता है कि प्रथम जनवरी हमारा नववर्ष नहीं है, हमारा नव वर्ष चैत्र सुदी प्रतिपदा है। इसी दिन को हमें नव वर्ष के रूप में मनाना चाहिये। इसलिये इस दिन को सभी भारतवासियों को बड़े उत्साह से नव वर्ष के रूप में मनाना चाहिये ताकि हमारे जीवन में निरन्तर नवीनता आती रहे और हम मंगलता की तरफ निरन्तर आगे बढ़ते रहें। आओ इस दिन को नव वर्ष के रूप में 11 अप्रैल 2013 को मनाएं।

आर्य बन्धुओं के लिये तो यह दिन और भी महत्वपूर्ण है जहां यह नव वर्ष है वहां आर्य समाज का स्थापना दिवस भी है। यदि महर्षि इस दिन सन 1875 में आर्य समाज की स्थापना न करते तो शायद आज हम चैत्र सुदी प्रतिपदा के महत्व को भी भूल जाते। क्योंकि उस समय ईसाइयत का बहुत बड़ा प्रचार हो रहा था। हिन्दुओं को धड़ाधड़ मुसलमान और ईसाई बनाया जा रहा था। पढ़ा लिखा वर्ग भी ईसाइयत से प्रभावित था। वह हिन्दू धर्म के ढकोंसलों और अंधविश्वासों तथा छिन्न भिन्न पूजा पद्धतियों से तंग आ गया था। उसके लिये यह निर्णय करना कठिन था कि वह किस मत को माने, शैव वैष्णवों का विरोध करते थे। वैष्णव शैवों का विरोध करते थे। पुराणों की कई कपोल कथाएं उन्हें हिन्दू धर्म से दूर ले जा रही थीं। देश गुलामी की जंजीरों में विशेष रूप से जकड़ा हुआ था। अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज उठाने की किसी में हिम्मत नहीं थी। विधवाओं, अनाथों को ईसाई और मुसलमान संभालते जा रहे थे। चारों तरफ हर दिशा में अंधकार ही अंधकार दिखाई पड़ता था। ऐसे अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी और हिन्दू धर्म के वास्तविक स्वरूप को लोगों के सामने रखा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तर्कपूर्ण खंडन-मंडन को अपनाया और संसार के भूले भटके लोगों को सच्ची राह दिखाई परन्तु कुछ लोगों को उनका यह सुधारवादी कार्य पसन्द नहीं आया और उन्होंने उन्हें अपने रास्ते से हटाने के लिये उन्हें 17 बार विष पिलाया। वाह रे ऋषि आप विष पीकर भी दूसरों को अमृत पिलाते रहे। मृत्यु को गले लगा लिया परन्तु अपने सुधारवादी कार्यों को नहीं छोड़ा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को आभास हो गया था कि यह विरोधी लोग मुझे देर तक कार्य नहीं करने देंगे इसलिये उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में आर्य समाज की स्थापना 7 अप्रैल 1875 को चैत्र सुदी प्रतिपदा को मुम्बई में कर दी। उसके पश्चात सारे भारत में आर्य समाजों की स्थापना होनी आरम्भ हो गई। 1883 में दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द का बलिदान हो गया परन्तु आर्य समाज तब से लेकर आज तक महर्षि दयानन्द के बताये हुये व दिखाए हुए मार्ग पर चल रहा है। जो कार्य महर्षि दयानन्द ने आरम्भ किये थे आर्य समाज ने अपने जन्म काल से ही उन्हें अपना लिया।

आर्य समाज का स्थापना दिवस 11 अप्रैल को मनाते हुये प्रत्येक आर्य बन्धु व प्रत्येक बहिन को यह विचार अवश्य करना चाहिये कि वह अपने कर्त्तव्य का कहां तक पालन कर रहे हैं। वह कहीं महर्षि दयानन्द के उद्देश्य से व आर्य समाज के उद्देश्य से दूर तो होते नहीं जा रहे।

आर्य समाज ही एक मात्र ऐसी संस्था है जो निस्वार्थ भाव से अपना कार्य कर रही है क्योंकि आर्य समाज की स्थापना ही समाज सुधार व जन कल्याण के लिये की गई है इसलिये 11 अप्रैल 2013 को नव वर्ष मनाते हुये व आर्य समाज का स्थापना दिवस मनाते हुये हम संकल्प लें कि हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के पदचिन्हों पर चलते हुये महर्षि के स्वप्नों को साकार करेंगे। वेद का संदेश घर घर तक पहुंचायेंगे। लोगों को गुरुडम से बचाएंगे, समाज सुधार व राष्ट्र उद्धार के कार्यों में इस दिन से जुट जाएंगे।

-प्रेम भारद्वाज महामंत्री एवं सम्पादक

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिक उत्सव 12-13 अप्रैल को

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिक उत्सव 12 एवं 13 अप्रैल 2013 को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। 12 अप्रैल को 51 कुण्डीय हवन यज्ञ गुरुकुल परिसर में होगा जिसमें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारी एवं पदाधिकारी शामिल होंगे। इस वार्षिक उत्सव में आर्य जगत के महान विद्वान एवं सन्यासी पधार रहे हैं। भजनोपदेश श्री ओम प्रकाश जी यमुनानगर के होंगे। 13 अप्रैल को मुख्य समारोह कुलाधिपति श्री सुदर्शन शर्मा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में होगा। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह इस अवसर पर पधार कर धर्म लाभ उठाएं।

-प्रो० स्वतन्त्र कुमार कुलपति

आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य

-ले० सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय, जालन्धर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्यसमाज की स्थापना संसार को शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति कराने हेतु की थी। अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने आर्य समाज के दस नियमों में एक नियम यह भी बनाया कि-

''संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है- अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'' महर्षि का इस नियम को बनाने का यही उद्देश्य था कि कहीं हम अपने लक्ष्य से भटक न जाए। दूसरे मत-सम्प्रदायों की तरह हम अपने तक ही सीमित न रह जाएं।

महर्षि ने इस प्रकार स्तम्भ का निर्माण किया था इस उद्देश्य से कि इसकी जगमगाती ज्योति से सर्वत्र वैदिक ज्ञान का प्रकाश फैल जाएगा। ऋषि उस अन्धकार को सर्वथा मिटाना चाहते थे कि जो स्वार्थरत और रूढ़िवादी तत्वों ने अनेकानेक भ्रांतियों का प्रचार कर अखिल विश्व को अन्धकारमय बना दिया था। ऋषि का लक्ष्य था कि आर्यसमाज के सदस्य स्वयं ज्ञानोपार्जन कर सृष्टि के कोने-कोने में पहुँच कर वैदिक नाद बजाऐंगे और अपनी ध्वजा फहरायेंगे। आर्य समाज की स्थापना का जो उद्देश्य था उसका कुछ दिग्‌दर्शन और आभास अमरीका के एक दार्शनिक डॉक्टर ऐन्ड्रयू जैकसन डेविस के निम्नलिखित विचारों से भली प्रकार हो सकता है-

''मैं एक ऐसी अग्नि को देखता हूँ जो सर्वव्यापक है, वह अप्रमेय प्रेम की अग्नि है, जो सर्व विद्वेष को भस्मसात् करने के लिए प्रज्वलित हो रही है और सर्व वस्तुजात को पवित्र बनाने के लिए पिघला रही है। अमरीका के प्रशस्त क्षेत्रों, अफ्रीका के बड़े स्थलों ऐशिया के शाश्वतिक पर्वतों, यूरोप के विशाल राज्यों और राष्ट्रों में सर्वनाशन सर्वपावन, इस पावक की प्रज्वलित ज्वालाऐं मुझे दिखाई दे रही हैं। इस अनन्त अग्नि को जो कि निश्चित रूप से संसार भर के राज्यों साम्राज्यों और शासन सम्बन्धी दोषों का सामना करेगी। देखकर मैं अतीव हर्षित हो रहा हूँ, और जाज्वलयमान उत्साह के साथ जीवन धारण कर रहा हूँ। सब उच्चतम पर्वत जल उठेंगे। उपत्यका के सारे सुन्दर नगर नष्ट हो जायेंगे। मनोहर गृह और प्रेमलुप्त हृदय पिघल कर एक हो जायेंगे और सूर्य की उज्जवल किरणों के सामने ओस के बिन्दुओं के समान पुण्य और पाप समिश्रित एक होकर अन्तर्धान हो जायेंगे।''

अनन्त उन्नति की विद्युत से मनुष्य का हृदय विक्षुब्ध है। आज केवल उसके स्फुलिंग आकाश की ओर उड़ रहे हैं। वाग्मियों, कवियों और पवित्र पुस्तक-प्रणेताओं के मनोभावों के रूप में उसकी लपकती हुई ज्वालाएं यत्र-तत्र दृष्टिगोचर हो रही हैं। सनातन आर्य धर्म को उसकी आद्य पवित्र अवस्था को प्राप्त कराने के लिए आर्यसमाज नामक अग्निकुण्ड में इस अग्नि का आधान हुआ था और वह भारत में ईश्वर के प्रकाशप्राप्त (लब्ध ज्योति) पुत्र दयानन्द सरस्वती के हृदय में प्रादूर्भूत और प्रज्जवलित हुई थी। ईश्वरीय ज्ञान की यह अग्नि उससे पौरस्त्य विचारों की भूमि की बहुत सी उच्च और उज्जवल आत्माओं को प्राप्त हुई। यह सर्वनाशक अग्नि सब ओर ऐसी प्रचण्डता से प्रज्जवलित थी कि जिसका ध्यान उसके प्रथम प्रकाशक दयानन्द को भी न आया था। हिन्दू और मुसलमान मिलकर इस अग्नि को बुझाने दौड़े और वे ईसाई भी, जिनकी वेदियों की अग्नियाँ और पवित्र बतियां प्रारम्भ में भावक पूर्व में ही प्रकाशित हुई थी। एशिया के इस नये प्रकाश को बुझाने के प्रयत्न में हिन्दू, ईसाई और मुसलमानों के साथ मिल गए परन्तु यह अग्नि बढ़ती और फैलती गई।

ऋषि के बाद उनकी शिक्षा लेकर कई दीवाने निकले। गुरूदत्त विद्यार्थी ने सर्वस्व त्याग कर और ऋषि के बताए मार्ग को अपना कर आर्य विचारधारा के प्रचार और प्रसार में अपना पूरा जीवन दे दिया। वीर लेखराम ने उनका पूर्ण अनुकरण किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने गंगा पावनी के तट पर बैठकर इसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए घोर तपस्या की और आर्य समाज को ऐसी देन दी जिसके द्वारा हजारों की संख्या में वेद और वैदिक सिद्धान्तों का मनन करने वाले विद्वान प्राप्त हुए। महात्मा हंसराज ने इसी धारणा को लेकर अपनी झोली पसारी और एक ऐसी संस्था को जन्म दिया जो पाश्चात्य शिक्षा पद्धति को मुंह तोड़ जबाव देने का कार्य कर रही है। लाला लाजपतराय का इसी दीक्षा के कारण जीवन में महान परिवर्तन आया और पंजाब केसरी ने इसी साहस और अगाध श्रद्धा के बल पर देश की स्वाधीनता। प्राप्ति हेतु अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी।

यह परम्परा जैसे-जैसे निरन्तर आगे बढ़ती गई, वैसे-वैसे इसी स्त्रोत से सैंकड़ों सन्त, महात्मा, वानप्रस्थी सन्यासी उपजे। अनेक अन्य वेदों के प्रकाण्ड विद्वान उत्पन्न हुए। इसी कार्यक्षमता, साधना और अटूट श्रद्धा को देखकर न केवल भारत देशवासी अपितु सारा संसार चकित रह गया कि यह तीव्र प्रवाह धारा वास्तव में तनिक काल में जगत में फैल जाएगी। सर्वसाधारण के समक्ष जब आर्यसमाज का नाम आता तो श्रद्धा और स्नेह से मस्तक नत हो जाता। लोगों के हृदय में इनके लिए अपार प्रेम उमड़ने लगा क्योंकि इसी के द्वारा भविष्य उज्जवल बनने की आशा बँधी, इसी के द्वारा निर्बल निस्सहाय व्यक्तियों को समाज में रहने को सहारा मिला इसी से वास्तविक सुख और शांति आत्मा को प्राप्त होने का पूर्ण विश्वास हो गया।

आर्यसमाज अपने इन निस्वार्थ और अथक कार्यकर्ताओं की शक्ति और उत्साह पाकर और जनता का स्नेह और विश्वास लेकर आगे बढ़ने लगा। आर्य विद्वानों के प्रवचन और भाषण सुनने के लिए लोग लाखों की संख्या में एकत्रित होते और उनकी वाणी से निकले हुए उपदेश सुनकर आत्मा में शांति और संतोष का अनुभव करते। जनता ने इस संस्था के प्रचार-प्रसार के लिए अपने खजाने खोल दिये। अपना सर्वस्व अर्पण किया क्योंकि उन्हें तो एकमात्र लालसा थी सच्चे सुख और शांति के प्राप्त करने की जिसका शताब्दियों से निरन्तर अभाव हो रहा था।

इस प्रकार आर्यसमाज देश और समाज में महान परिवर्तन लाया। ऐसा अनुभव होने लगा कि यह संख्या शीघ्र ही सब संसार में छा जायेगी और इसी के द्वारा विश्व के सभी देशों को कल्याण मार्ग मिल सकेगा। इसी भावना से यूरोप, अफ्रीका और अन्य एशियाई देशों में आर्यसमाज के प्रचारकों ने पहुंच कर आर्य विचारधारा पहुँचाई और अनेक स्थानों पर आर्य समाज स्थापित हो गये और तीव्रता और कुशलता से कार्य का संचालन होने लगा। आर्यसमाज ने केवल धार्मिक क्षेत्र में ही अपनी गति सीमित न रखकर सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करना आरम्भ किया। हिन्दू समाज से अस्पृश्यता का मिटाना, धन के लालच में पड़कर अज्ञानता के कारण धर्म परिवर्तन करने वालों को बचाना, नारी जाति को सुशिक्षित बनाकर समाज में उन्हें समानाधिकार दिलाना, पशुवध का विरोध, पाखंडियों द्वारा भ्रममूलक प्रचार का विरोध आदि कितने ही कार्य आर्यसमाज में शामिल कर लिए क्योंकि समाज का सुधार किए बिना धर्म का प्रचार करना कठिन था। इस शुभ कार्य में देश की जनता ने पूर्णतया साथ दिया। विरोधियों ने सतत प्रयत्न किए आर्यसमाज पर प्रहार करने के परन्तु सत्य के सामने कोई ठहर न सका इस कारण आर्य समाज ने अंधविश्वासों का पूर्णतया खण्डन किया, नारी शिक्षा का सूत्र पात किया, बाल विवाह का विरोध किया। इस प्रकार आर्य समाज ने कुरीतियों से लेकर देश की स्वतन्त्रता के लिए कार्य किया। महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा पाकर कितने ही नवयुवकों ने अपने जीवन बदल डाले और देश की आजादी के लिए अपने आपको पूर्णतया समर्पित कर दिया।

यह रूपरेखा है उस आर्य समाज के इतिहास की जिसकी कल्पना करते हुए महर्षि दयानन्द ने इस की स्थापना की थी। परन्तु आज आर्य समाज की परिस्थिति में पर्याप्त परिवर्तन आ गया है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

ईश्वर सिद्धि सम्बन्धी मन्तव्य और मैं

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर लश्कर (ग्वालियर)

(गतांक से आगे)

काफी लम्बे समय के पश्चात् मुंशीराम पर ईश्वर की कृपा हुई। शराब के नशे में दुत्त मुंशीराम अपने एक मित्र के घर पहुंचे। फिर शराब का दौर चला। थोड़ी देर में मित्र उठकर घर के अन्दर चला गया। कुछ देर बाद किसी नारी का आर्तनाद सुनकर मुंशीराम अन्दर गये। देखते हैं कि एक अबला मित्र के हाथों में छटपटा रही है। मुंशीराम ने अपने नराधम मित्र को दोनों हाथ पकड़ कर धकेल दिया। और वह नारी उसके पंजे से छूटकर अंदर भागी। स्वामी श्रद्धानन्द अपनी आत्मकथा 'कल्याणमार्ग का पथिक' में लिखते है उस समय मेरे नेत्रों के समक्ष पत्नी शिवदेवी और महर्षि दयानन्द उपस्थित हो गये। महर्षि ने कहा-मुंशीराम ! क्या अब भी परमेश्वर पर तेरा विश्वास न होगा ? अर्थात् किस अदृश्य शक्ति ने घोर रात्रि के बीच इस अबला नारी का सतीत्व बचाने के लिये तुझे भेजा ? महर्षि का स्पष्ट आशय यही था कि ईश्वरीय प्रेरणा से ही तुम यहां उपस्थित हुये। प्रभु अपने अस्तित्व को इसी तरह सिद्ध करता है।

रही गुरूदत्त की बात। मिल आदि पाश्चात्य दार्शनिकों के ग्रंथों का प्रणयन करने के पश्चात उनकी वृत्ति संशयात्मक हो गई थी-ईश्वर है अथवा नहीं है ? अजमेर पहुंचने पर महर्षि को मृत्युशैया पर लेटे हुये देखा। रात्रि भर वे डॉ० लक्ष्मणदास के साथ महर्षि की शैया के समीप बैठे रहे। डॉ० लक्ष्मणदास के अनुरोध पर अजमेर के सिविल सर्जन डॉ० न्यूमेन को बुलाया गया। वे महाराज पर रोग के प्रचण्ड आक्रमण किन्तु रोगी की अनन्य, अतिमानवीय सहनशीलता को देखकर स्तम्भित रह गये। उन्हें अतीव आश्चर्य हुआ कि इस भीषण स्थिति में भी कोई रोगी ऐसी दारूण वेदना को असीम धैर्यपूर्वक सहन कर सकता है !!!

गुरूदत्त टकटकी बांधे महर्षि के महाप्रयाण को देख रहे हैं। पूरे शरीर में फफौले निकल रहे हैं। गले के अन्दर तक फफौले पड़ गये हैं और बार-बार शौच जा रहे हैं। पेट में भयंकर पीड़ा हो रही है और महर्षि पूर्णतया शांत। न कोई आह, न कोई ऊह। गुरूदत्त के मन में विचार बार-बार कौंध रहा था कि कौन सी अदृश्य शक्ति इस भीषण अवस्था में महर्षि को मन व इन्द्रियों पर अटूट नियंत्रण की शक्ति प्रदान कर रही थी। ऐसा प्रयाण निष्णात् योगी, ईश्वर के परम विश्वासी का ही हो सकता है। सदैव के लिये ईश्वर के संबंध में संशय की स्थिति समाप्त हो गई। ईश्वर की सत्ता पर पूर्ण विश्वास हो गया। जान लिया कि ईश्वर क्या है। उपरोक्त दोनों उदाहरणों से स्पष्ट है ईश्वर पर विश्वास ईश्वर की कृपा से ही संभव है। ईश्वर कृपा किस तरह करता है, यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए पृथक हो सकता है। राजा भोज के लिए भेजे गये हत्यारों के हृदय में मासूम, निरपराध भोज की हत्या न करने की प्रेरणा देकर। सब ओर से निराश, हताश, परिवार की भोजन व्यवस्था करने में भी असमर्थ महाराणा प्रताप के समक्ष यकायक 'भामाशाह को उपस्थित कर ; लौटते हुए महाराणा प्रताप की हत्या करने के लिए पीछा करते हुए मुगल सैनिकों का विद्रोही भाई शक्तिसिंह से वध कराकर।

वेद मर्मज्ञ, आचार्य प्रवर शिवनारायण उपाध्याय (कोटा) ने इस विषय में एक भिन्न संदर्भ में मुझे लिखा-''ईश्वर पर विश्वास केवल तर्कपूर्ण भाषा में उसकी सिद्धि करने मात्र से नहीं हो जाता। उसके लिए जीवन में घटने वाली आश्चर्यजनक घटनाओं का बड़ा हाथ होता है। मैंने स्वयं जीवन में अनुभव किया है कि किस प्रकार वह हमेशा हमारी सहायता के लिए उपस्थित रहता है। वास्तव में प्रयत्न करके आप उसे नहीं जान सकते।'' यथार्थ में हम सब भी अपने-अपने जीवन में इस वास्तविकता से परिचित होते हैं।

प्रारम्भ से लेकर अब तक इस लेख में मैंने ब्रह्म को, ईश्वर को जानने समझने की अपने मन-मस्तिष्क की प्रक्रिया को दर्शाया है। गुणीजन, सुधीजन को यह सब विवरण जाना पहचाना समझा हुआ लगे पर मैं कब उनके लिए लिखता हूँ। मेरा लेखन तो स्वयं मुझ जैसे सामान्य बुद्धिवालों के लिए है जो विद्वानों की दुरूह शब्दावली से कुछ समझ ही नहीं पाते। मुझे इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में से निकलने पर शान्ति मिली है। मेरा मनोबल, आत्मविश्वास बढ़ा है। पर प्रश्न खड़ा है-ईश्वर को समझने, जानने, मानने वाले का जीवन कैसा होना चाहिए। महर्षि बारम्बार 'दुरितानि परासुव' क्यों कहते हैं। इस पर विचार करने से पूर्व मैं देखता हूँ-ईश्वर को जाना-माना महर्षि दयानन्द ने। उनसे प्रेरणा पाकर जाना-माना पंडित लेखराम, पं० गुरूदत्त विद्यार्थी और स्वामी श्रद्धानन्द ने। न केवल इन लोगों की ही काया पलट गई बल्कि जनमानस की भी काया पलटने की सामर्थ्य परमपिता परमात्मा से प्राप्त की। मेरी अल्पमति में स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज इसी श्रेणी में परिगणित किए जा सकते हैं। अन्य अनेक विद्वान एवं संन्यासी भी इसी श्रेणी की पात्रता रखते होंगे। उनका मूल्यांकन करने की भी योग्यता मुझमें नहीं है। मैने तो स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज को छोड़कर उन्हीं दिवंगतों का नाम लिया है जिन्होंने महर्षि दयानन्द के समान ही सर्वस्व न्यौछावर कर उन्हीं जैसी गति पाई।

प्रश्न आज के वैदिक धर्मियों का है जो ईश्वर के इस स्वरूप को जानने व मानने का दावा करते हैं। सम्पूर्ण विश्व में इनकी संख्या लगभग 50-75 लाख होगी। यह विशाल जनसंख्या सम्पूर्ण विश्व का चारित्रिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य बदलने के लिए पर्याप्त है। पर यह जन क्या दावा कर सकते हैं कि भ्रष्टाचार, अनैतिकता, कर्तव्य निर्वहन के प्रति निष्ठा का अभाव उनमें नहीं है। परिवार में एक दूसरे के प्रति प्रेम आदर का भाव है। कन्या भ्रूण हत्या के दोषी नहीं है। पारिवारिक झगड़े और मुकद्दमेबाजी नहीं हैं। यदि ये सब बाते हैं तो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का नारा लगाना कोरी गलेबाजी नहीं तो क्या है ? यदि सम्पूर्ण अर्थ में 'आर्य'-श्रेष्ठ नहीं बन सकते तो कुछ गुण ही अपना लीजिये। समाज में आप अलग दिखेंगे। वे गुण आपको वैशिष्ट्य प्रदान करेंगे। आप श्रद्धा व प्रीति का पात्र बनेंगे। लेकिन हम आज देखते हैं कि इनमें से एक बड़ा वर्ग आर्यसमाज को ही रसातल पर पहुंचाने के लिए कटिबद्ध है। यह वर्ग वैदिक धर्मी है ही नहीं। इस वर्ग का प्रवेश आर्यसमाज के नेतृत्व की अदूरदर्शिता का परिणाम है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज स्थापित किया था। अपनी विरासत को सहेजने, सम्भालने व वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को तीव्र गति प्रदान करने के लिए। यह तो हुआ ही नहीं, हम महर्षि को ही घोल कर पी गए।

पृष्ठ 4 का शेष- आर्य समाज की.....

आज हम अपने अतीत को भूलते जा रहे हैं जिसके लिए कितने ही बलिदानियों ने अपना तन-मन और धन न्यौछावर कर दिया था। आज आर्य समाज की स्थिति को देखते हुए मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां बरबस याद आती हैं-

हम कौन थे, क्या हो गए
और क्या होंगे अभी।
आओ मिलकर विचारे आज
ये समस्याऐं सभी।

आज हमें आर्य समाज के प्रचार व प्रसार के लिए अपनी पारिवारिक स्थिति को सुदृढ़ और सक्षम करना होगा। शोक की बात है कि आर्यसमाजी परिवारों की देवियां तथा पुत्र-पुत्रियाँ आर्य समाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों तथा मूलाधारों से अपरिचित हैं। परिवारों के सिद्धान्त वादी, ज्ञानी, कर्मशील बनने पर ही आर्यो को जाति-पाति से, अनार्य रीति-रिवाजों से, रूढ़ियों कु-संस्कारों से, पाखण्ड और अंध-विश्वासों से, बुराईयों से मुक्ति मिलेगी। जब तक आर्यसमाज में सभ्य-सभ्याओं के व्यक्तित्व का शोधन न होगा तब तक आर्यसमाज का अन्तः शोधन कदापि न हो सकेगा, यह स्मरण रखना चाहिए। व्यक्तियों का समूह ही तो समाज है। यथा व्यक्ति तथा समाज की उक्ति को झुठलाने से आर्यसमाज का उत्थान नहीं, पतन ही होता चला जाऐगा व्यक्ति सुधरेंगे तभी समाज सुधरेगा और तभी आर्य समाज अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा।

क्या आर्यसमाज के वर्तमान सदस्य उपर्युक्त विचारों पर चिन्तन करके, मनन करके अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व को अनुभव करने की कृपा करेंगे? क्या उनको कभी यह ध्यान आयेगा कि आगे चलकर इतिहास उनके कार्यो की कैसी आलोचना करेगा। ''आत्मदा बलदा'' परमपिता सब को बल प्रदान करें कि हम दयानन्द के सच्चे अनुयायी सिद्ध हों।

हम व्यर्थ में निन्दा न कर खाली समय में प्रभु स्तवन करें

-ले० डा. अशोक आर्य, कौशाम्बी

गत मन्त्र में उपदेश किया था कि हम ज्ञानी व संयमी व्यक्तियों के समीप बैठकर उनसे ज्ञान पावें। अब बताया गया है कि (क) हम कभी किसी की निन्दा न करें। (ख) हम सदा व्यर्थ के कार्यों से दूर रहते हुए अवकाश के क्षणों में प्रभु की ही चर्चा करें, प्रभु नाम का ही स्मरण करें तथा उस के ही अर्थ का चिन्तन करें। इस बात को मन्त्र इस प्रकार उपदेश कर रहा है:-

उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यत-श्चिदास्त।
दधाना इन्द्र इद् दुवः॥
ऋग्वेद १.४.५॥

इस मन्त्र में दो बातों पर बल दिया गया है :-

१) हम व्यर्थ में किसी की निन्दा न करें-हम कभी निन्दात्मक शब्द न बोलें। हम कभी किसी की निन्दा न करें। यहां तक कि हमारे मुख से कभी भूल कर भी निन्दात्मक शब्दों का उच्चारण न हो, हमारे मुख से कभी किसी की निन्दा में एक भी शब्द न निकले। हम सदा वेदों के दिए उपदेश के अनुगमन में रहते हुए भद्र शब्दों का ही उच्चारण करें। हमारा सदा यह व्रत रहे कि हम सूक्तात्मक अर्थात् जो वेद मन्त्र के समूह रूप सूक्त में आदेश दिये गए हैं, उनके अनुरुप चलते हुए स्तुति रुप जो काव्य दिए गए हैं, जो कथन दिए गए हैं, उन्हें ही बोलूं, उनका ही गायन करूं।

मन्त्र के इस प्रथम खण्ड में यह जो कुछ कहा गया है, इस सब का भाव है कि मानव जीवन तपश्चर्या का जीवन है। इस जीवन में मानव ने जब भी पग आगे बढ़ाना है बड़ा ही सोच समझ कर तथा जो समाज के मंगल के लिए हो, कल्याण के लिए हो वही सब करना है। यूं ही इधर उधर भटकते फिरना तथा अपने खाली समय में भटकते हुए किसी की निन्दा करते रहना, किसी के अमंगल के लिए सोचते रहना उत्तम नहीं है। किसी की निन्दा करना धर्म नहीं अधर्म है। इसलिए हम अपने मुख से किसी की निन्दा के लिए एक शब्द का भी उच्चारण न करें। सदा दूसरों के लिए शुभ ही सोचें, शुभ ही विचारें। इस में ही भला है, इसमें ही कल्याण है। जब हम इस प्रकार की प्रतिज्ञा लेकर समाज के कल्याण के लिए कृतसंकल्प होंगे तो हमें सब ओर मंगल ही मंगल दिखाई देगा।

२. बेकार समय व्यर्थ करने से बचो-मन्त्र के इस भाग से हमारे वह पूज्य पिता हमें उपदेश करते हुए कह रहे हैं कि हम कभी दूसरों के कार्यों में अकारण, हस्तक्षेप न करें। ऐसा करना निन्दनीय होता है, दूसरों को क्लेश पहुंचाने वाला होता है, दूसरे का तिरस्कार करने वाला, अपमान करने वाला होता है। इस लिए हमें इस प्रकार के हस्तक्षेप से बचते हुए तथा दूसरों की निन्दा से बचते हुए सदा अपना जीवन चलाना चाहिए। अतः हम अनुपयोगी, अनावश्यक तथा बेकार के कार्यों से अपने को सदा दूर रखें। आज अनेक व्यक्ति अपने आप को खाली समझ कर अथवा गाडी आदि में यात्रा के समय ताश आदि खेल कर अपने समय को नष्ट करते हैं, यह उत्तम नहीं है। हम अपने इस बेकार समय को भी निर्माणात्मक कार्य में लगा कर अपनी हित लाभ के साथ ही साथ अन्य भी अनेक लोगों के भी हित के कार्य कर सकते हैं। इसलिए ऐसे बेकार के कार्यों में समय नष्ट न कर सदा उत्तम कार्यों में ही कार्यरत हों। यह ही उत्तम है, यह ही कल्याण का, प्रगति का साधन है। इसलिए मन्त्र की भावना के अनुसार बेकार के खेल खेलना तथा बेकार में गप शप करते रहना मानव प्रगति पथ में बाधक होता है, इसलिए ऐसे कार्यों से सदा दूर रहना ही उत्तम है।

मन्त्र इस तथ्य को ही आगे बढ़ाते हुए बता रहा है कि जब कभी भी हमारे पास अवकाश के क्षण आवें, हमारे पास जब भी कभी खाली समय हो अथवा जब भी हम अपने घर के सब आवश्यक कार्यों से निर्वृत होकर स्वयं को खाली समझें, जब भी हम स्वाध्याय करते हुए श्रान्त हो जाये, थक गये हों तो इस समय को हम निश्चय ही उस परम ऐश्वर्य से युक्त प्रभु में लगावे, प्रभु की परिचर्चा में लगावें, प्रभु के स्मरण में लगावें, प्रभु की स्तुति में लगावें, प्रभु के समीप बैठकर इस समय को व्यतीत करें। इस प्रकार हम सदा ही प्रभु परिचर्चा को, प्रभु स्तवन को, प्रभु संवाद को धारण करने वाले हों तथा अपने चित की वृतियों को सदा ही प्रभु के साथ जोड़े रखे, यह ही कल्याण का साधन है।

गीता में यज्ञ का महत्त्व

-पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E कैलाश नगर, फाजिल्का, पंजाब

वैदिक संस्कृति में यज्ञ का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक आदि वैदिक ग्रन्थों के अतिरिक्त रामायण, महाभारत, स्मृतियां, गृहसूत्र एवं एतादृश अन्य ग्रन्थों में भी यज्ञ की उपादेयता उपलब्ध होती है। महाभारत का अंश होने के कारण श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में भी यज्ञ को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है तभी तो भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को यज्ञ की महत्ता का उपदेश करते हुए कहते हैं-

सहयज्ञा, प्रजा, सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वो ऽस्तिवष्टकामधुक्॥

प्रजापति ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजा को रचकर कहा कि इस यज्ञ द्वारा वृद्धि को प्राप्त होवो और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित कामनाओं को देने वाला होवे।

देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥ 3/11

इस यज्ञ द्वारा देवताओं की उन्नति करो और वे देवता लोग तुम लोगों की उन्नति करें। इस प्रकार आपस में कर्त्तव्य समझ कर उन्नति करते हुए परम कल्याण को प्राप्त होवोगे।

इष्टान्-भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तै र्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एवं सः॥ 3/12

यज्ञ द्वारा बढ़ाए हुए देवता लोग तुम्हारे लिए बिना मांगे ही प्रिय भोगों को देंगे। उनके द्वारा दिए गए भोगों को जो पुरूष इनको दिए बिना ही भोगता है, वह निश्चय ही चोर है।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥ 3/13

यज्ञ से शेष बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरूष सब पापों से छूट जाते हैं और जो पापी लोग अपने लिए ही पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं। गीता का यह कथन वस्तुतः वेद पर ही आधारित है-

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेता सत्य ब्रवीमि वध इत-स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी॥
ऋ. 10/117/6

अज्ञानी मनुष्य मुफ्त का भोजन (बिना कमाया हुआ) पाने का यत्न करता है अर्थात् अपने भोजन के लिए कुछ करना नहीं चाहता। उसका ऐसा प्रयत्न उसके नाश का ही कारण है। जो अकेला खाने वाला है वह केवल पाप का भागी होता है। मैं सत्य कहता हूँ।

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यों यज्ञः कर्म समुद्भवः॥ 3/14

सम्पूर्ण प्राणी अन्न से जीते हैं, अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है। वर्षा यज्ञ से होती है। यज्ञ कर्म से होता है।

ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्॥
ईश्वर भी नित्य ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है।
दैवामेवापरे ब्रह्म योगिनः पर्युपासते।
ब्रह्माग्नाबपरे यज्ञं यज्ञ नैवोपजुह्वनि॥ 4/25

दूसरे योगिजन देवताओं के पूजनरूप यज्ञ को ही अच्छी प्रकार करते हैं। दूसरे पर ब्रह्म परमात्मारूप अग्नि में ही यज्ञ के द्वारा ही यज्ञ को हवन करते हैं। गीता का यह कथन भी वेद पर आधारित है-

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः॥ यजुर्वेद
देवों ने यज्ञ से यज्ञ का यजन किया।
यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्मसनातनम्।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरूसन्तम॥ 4/31

हे कुरुश्रेष्ठ अर्जुन! यज्ञ के परिणामरूप ज्ञानामृत को भोगने वाले योगीजन सनातन ब्रह्म को प्राप्त होते हैं। यज्ञ रहित पुरुष को यह मनुष्य लोक भी सुखदायक नहीं है फिर परलोक कैसे सुखदायक होगा।

अतः यज्ञादि पवित्र कार्य यथाशक्ति अवश्य करने चाहिए क्योंकि यह त्याज्य नहीं है-

यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्॥ 18/5

यज्ञ, दान और तप रूप कर्म त्यागने योग्य नहीं हैं। यज्ञ, दान, दान और तप ही बुद्धिमान् पुरुषों को पवित्र करने वाले हैं।

इस प्रकार गीता में वर्णित यज्ञ की महत्ता स्वयंमेव स्पष्ट है, विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं रह जाती।

वेद मंदिर अवाखां का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वेद मंदिर अवाखां (दीनानगर) में 24 फरवरी 2013 दिन रविवार को भाई रामभजदत्त चौधरी जी का 147वां जन्म दिवस सदैव की भान्ति श्रद्धापूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 23 फरवरी 2013 दिन शनिवार को रात्रिकालीन सत्र से उत्सव का शुभारम्भ किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से आए हुये भजनोपदेशक श्री अरुण कुमार जी विद्यालंकार के भजनों का कार्यक्रम बहुत ही प्रेरणादायक व प्रभु भक्ति के भजनों से ओत प्रोत था। उसके बाद सभा के महोपदेशक श्री विजय कुमार जी शास्त्री का प्रेरणादायक व भाई रामभज दत्त चौधरी जी के जीवन सम्बन्धी घटनाओं व वेदों पर आधारित प्रवचन हुआ। भारी संख्या में आए हुये आर्य भाई एवं बहिनों ने सत्संग का आनन्द उठाया। 24 फरवरी दिन रविवार को सुबह हवन यज्ञ के साथ कार्यक्रम की शुरूआत हुई। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित जितेन्द्र जी शास्त्री एवं श्री वेद व्रत जी शास्त्री जी थे। उन्होंने मुख्य यजमान आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के उपप्रधान श्री राजिन्द्र देव विज व आई हुई संगत से पवित्र हवन कुंड में आहुतियां डलवाई। यज्ञोपरान्त श्री रामस्वरूप जी कलारिया ने ध्वजारोहण की रस्म निभाई। उसके उपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्यरतन की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन का आयोजन बाहर प्रांगण में हुआ। इस सम्मेलन के मुख्यातिथि कैबिनेट मंत्री स्थानीय निकाय पंजाब सरकार भगत चुनी लाल जी थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी के आदर्शों का विवरण सरल ढंग से आर्य जनता के सामने रखा तथा वेद मंदिर के विकास के लिये पांच लाख रुपये की राशि देने की घोषणा की।

अन्य वक्ताओं में पंडित विजय कुमार जी शास्त्री, श्री ध्यान चंद जी पूर्व विधायक कठुआ (जम्मू कश्मीर), श्री रतन सिंह जी रिटायर्ड डीएसपी, पंडित मनोहर लाल जी आर्य मुसाफिर जालन्धर, श्री विशम्भर दास जी पूर्व संसदीय सचिव, श्रीमती सीमा देवी जी विधायक भौआ, श्री राजिन्द्र देव विज, श्री कमल किशोर जी, श्रीमती ज्योति नंदा जी प्रधान स्त्री आर्य समाज गुरदासपुर, श्री महिन्द्र भगत जी उपाध्यक्ष पंजाब भाजपा ने आर्य समाज, स्वामी दयानन्द जी, और भाई रामभज दत्त चौधरी जी की समाज के लिये सेवाओं के बारे में तथा राष्ट्रीय समस्याओं के बारे अवगत कराया। श्री सरदारी लाल जी आर्यरतन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि युवा पीढ़ी को आर्य समाज में लाना चाहिये और आर्य वैदिक पद्धति को अपनाना चाहिये। प्रधान श्री तीर्थराम जी ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर भाई रामभज दत्त चौधरी का परिवार विशेष रूप से वेद मंदिर में पधारा तथा आर्य समाज मेन बाजार दीनानगर, दयानन्द मठ दीनानगर, आर्य समाज गुरदासपुर, आर्य समाज कठुआ, आर्य समाज सुजानपुर, आर्य समाज मुकेरियां, आर्य समाज धारीवाल, आर्य समाज जंगियाल, आर्य समाज पठानकोट, आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर, आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर का विशेष योगदान रहा। जनता के आने से वेद मंदिर अवाखां में मेले का रूप धारण कर लिया। श्री अनिल गुप्ता, श्री कैलाश आर्य, श्री योगेन्द्र पाल गुप्ता, श्री अरुण विज, विजय महाजन, रमेश महाजन, मास्टर राम लाल, श्री शांता राम कश्यप, श्री विशाल कश्यप, श्री चमन लाल कपूर, श्री रविन्द्र कुमार परिवार सहित उपस्थित थे। शांति पाठ के बाद ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। अंत में विधवाओं को शॉल और बुजुर्गों को कम्बल इत्यादि वेद मंदिर द्वारा बांटे गये।

-तीर्थराम प्रधान

प्रवेश सूचना

आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय विद्यालय (10+2) गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग हरिद्वार में सत्र 2013-14 हेतु कक्षा 01 से 9 व 11 तक प्रवेश प्रारम्भ।

वैदिक संस्कारों पर आधारित एन. सी. ई. आरटी. पाठ्यक्रम सभी आधुनिक विषयों के साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास की शिक्षण संस्था। विज्ञान वर्ग में P.C.M एवं P.C.B. एवं वाणिज्य वर्ग तथा कला वर्ग। हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम।

प्रवेश तिथि-7 अप्रैल 2013 दिन रविवार

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

सम्पर्क सूत्र-9927016872, 9412025930, 9690679382, 9927084378, वेबसाइट-www.gurukulkangrividhyalaya.org

-जयप्रकाश विद्यालंकार (सहायक मुख्याधिष्ठाता)

गुरुकुल हरिपुर द्वारा अन्न-वस्त्र वितरण

गुरुकुल हरिपुर जुनवानी जि. नुआपड़ा (ओडिशा) के तत्वावधान में तथा जन सहयोग से आर्यजगत् के सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण जी आर्य के आशीर्वाद से ओड़िशा के बहुत ही पिछड़ा हुआ क्षेत्र फुलवाणी (कन्धमाल) जिला के नुआगां, राईकिया व फिरींगिया विकासखण्ड के विभिन्न 26 गांवों के अत्यन्त निर्धन 600 परिवारों को 21-22 फरवरी को अन्न-वस्त्र वितरण किया गया। गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के प्रत्यक्ष देखरेख में तथा गुरुकुल के आचार्य द्वय आचार्य दिलीप कुमार जी आचार्य धर्मराज जी एवं स्थानीय श्रद्धालु सहयोगियों के निष्ठा एवं पुरुषार्थ से यह वितरण का कार्यक्रम अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। ध्यान रहे सहयोग उन लोगों तक पहुंचाया गया जो पिछले 2008 के दंगे से बहुत ही पीड़ित थे और अपने आपको असहाय अनुभव करते थे ऐसे लोगों को चिहनांकित करके प्रत्येक परिवार को 25-25 किलो चावल एवं एक-एक साड़ी प्रदान किया गया। इस प्रकार एक परिवार को कुल 700/-सहयोग दिया गया।

वितरण कार्यक्रम के साथ-साथ तीन मुख्य वितरण केन्द्रों पर यज्ञ प्रवचन का कार्यक्रम भी हुआ। अनेक महिलायें एवं पुरुष वर्ग आर्य समाज के सम्पर्क में आये यज्ञोपवीत लिये इसके साथ 50 से 60 व्यक्ति मांस, मछली, नशा छोड़ने हेतु संकल्प लिये। जिला भर से 27 वैदिक धर्म के लिये समर्पित कार्यकर्त्ताओं का शाल एवं वैदिक सिद्धान्तों की पुस्तकों से सम्मानित किया गया। इस प्रकार बहुत ही उत्साहमय वातावरण एवं प्रेरणा तथा संकल्पों के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

स्वामी दयानन्द जन्म दिवस एवं ऋषि बोध पर्व मनाया

मालेरकोटला : स्थानीय आर्य समाज के प्रधान अनिल मैग्न एवं मन्त्री सुनीता मैग्न की अध्यक्षता में समाज के प्रांगण में स्वामी दयानन्द दिवस एवं ऋषि बोध पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सारे पण्डाल को दुल्हन की तरह सजाया गया। आचार्य दयानिधि शास्त्री जी ने हवन यज्ञ करवाया जिसमें आये सभी महानुभावों ने विश्व शान्ति हेतु यज्ञ में आहूतियां डालीं। यजमान की भूमिका श्री रमेश सिंगला एवं उनकी धर्म पत्नी सरोज सिंगला ने निभाई। प्रोग्राम की जानकारी देते हुए समाज के प्रचार मन्त्री एवं समाज सेवक तरसेम गुप्ता ने कहा कि कि इसी दिन ही स्वामी दयानन्द जी को ज्ञान प्राप्त हुआ था। आर्य स्कूल के बच्चों एवं मन्त्री सुनीता मैग्न ने स्वामी दयानन्द सम्बन्धी भजन सुना कर लोगों को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। मन्त्री सुनीता मैग्न ने बताया कि स्त्रियों की पढ़ाई, विधवाओं की शादी, छुआ-छूत एवं वेदों का प्रचार करने में स्वामी दयानन्द का विशेष योगदान था।

इस अवसर पर अनिल मैग्न, सुनीता मैग्न, प्रिंसीपल तरसेम गुप्ता एवं समूह स्टाफ, संजीव सूद, सुमन्त तलवानी, लीला सूद, कृष्णा आर्य, कविता जिंदल, सीमा पुरी, अंजना, समाज के लीगल एडवाईजर भुपेन्द्र कौशल, दानवीर प्रमोध जैन, संदीप कौशल, पुष्प जैन, सत्यपाल गुप्ता, रौशन बत्ता, वेद प्रकाश ढींगरा, प्रो. सीमा मैडम, मैडम सुमन भटेजा, विशाखा राम, वीणा आहूजा, सुधा, आरती, दलजीत सिंह के अतिरिक्त शहर की बहुत सी सामाजिक एवं धार्मिक संस्था के प्रतिनिधि उपस्थित थे। अन्त में ऋषि लंगर प्रसाद के रूप में वितरित किया गया।

-तरसेम गुप्ता (प्रचार मंत्री) आर्य समाज, मालेरकोटला

शिवरात्रि पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया

आर्य समाज जालन्धर छावनी में शिवरात्रि का पर्व बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया गया। श्री धर्मेन्द्र अग्रवाल एवं उनकी धर्मपत्नी, श्री अशोक जावेद एवं श्रीमती इन्दु शैली इस कार्यक्रम में यजमान थे।

स्कूल के बच्चों द्वारा बहुत आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। आर्य समाज की ओर से विभिन्न स्कूलों में 'महर्षि दयानन्द की समाज को देन' विषय पर भाषण प्रतियोगिता करवाई गई जिसमें तुलसी सनातन धर्म स्कूल के बच्चों में प्रथम एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। विक्टर स्कूल ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। इन सभी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार आर्य समाज जालन्धर छावनी में वैदिक प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम हुआ जिसमें पहले, दूसरे एवं तीसरे स्थान पर आए बच्चों को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। श्री तिलक राज शास्त्री जी मुख्यवक्ता के तौर पर उपस्थित थे। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। भारी संख्या में बच्चे, उनके अभिभावक, अन्य स्कूलों के शिक्षक, समाज के सदस्य एवं गणमान्य लोग भाग लेने आए हुए थे। कार्यक्रम के अन्त में प्रसाद एवं ऋषि लंगर का वितरण किया गया।

-जवाहर लाल महाजन मंत्री

वेद वाणी

सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च।
विश्वमन्यन्नि विशते यदेजति विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्यः।।

-ऋ० १०।३७।२

विनय-हे भगवान् ! मैं सत्य ही भाषण करने का व्रत ग्रहण करता हूँ। यह महाव्रत मेरी रक्षा करे, सब तरफ से रक्षा करे। दुनिया तो कहती है कि झूठ के बिना काम नहीं चल सकता, कि असत्य द्वारा ही बहुत बार रक्षा मिलती है। परन्तु मैं देखता हूँ कि एकमात्र रक्षा कर सकने वाले, हे सत्यस्वरूप! तुम ही हो, तुम्हारा सत्य ही है। सत्य वह महान् प्रकाशरूप वस्तु है जिसके प्रकाश से संसार के सब द्युलोक जगमगा रहे हैं और जिसके आंशिक प्रकाश को पाकर ये हमारे दिन अनन्तकाल से प्रकाशित होते आ रहे हैं और अनन्तकाल तक प्रकाशित होते रहेंगे। सत्य प्रकाश है और असत्य अन्धकार है। सत्य सनातन है, असत्य क्षणभंगुर है। भला अन्धकार हमारी कैसे रक्षा कर सकता है? भंगुर वस्तु का आश्रय हमें कब तक बचा सकता है? जो इसे समझते हैं वे सत्य के कारण आई विपत्तियों को देखकर कभी घबराते नहीं और दीन होकर कभी असत्य का आश्रय नहीं पकड़ते। क्योंकि वे देखते हैं कि सत्य के अतिरिक्त संसार में जो भी कुछ है वह सब विनश्वर है। असत्य चाहे कितना जीता-जागता दीखता हो-चाहे कितने बड़े आकार वाला, चाहे कितना शक्तिशाली, चाहे कितना कीमती दीखता हो-पर वह सब थोड़ी देर में विलीन हो जाने वाला है, राख हो जाने वाला है, मिट जाने वाला है। सत्य ही अचल है। झूठ-कपट की आलीशान दीखने वाली विजयें भी संसार में बेशक होती हैं, पर वे क्षण में चली जाती और हमें वहीं का वहीं गिराकर छोड़ जाती हैं। देर तक ईश्वरीय सत्यनियमों को दबाया नहीं जा सकता। घोर से घोर रात्रियाँ आवेंगी, पर फिर सूर्योदय होना निश्चित है। सदा प्रकाशमान सूर्य को केवल थोड़ी देर के लिए ही किसी आवरण द्वारा ओझल रखा जा सकता है। जरा देखो, जो अप्रतिहत रूप से बह रहा है वह तो ईश्वरीय व्यापक सत्यनियमों का प्रवाह ही है, और जो प्रतिदिन उदय हो रहा है और असल में सदा उदित रहता है वह [महान् सत्य का] सूर्य ही है।

साभार-वैदिक विनय, प्रस्तुति-रणजीत आर्य

ऋषि बोधोत्सव मनाया

आर्य समाज हबीब गंज (अमरपुरा) लुधियाना में महर्षि दयानन्द का जन्म दिन एवं ऋषि बोधोत्सव 10 मार्च 2013 रविवार को धूम-धाम से सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज हबीब गंज लुधियाना में 10 मार्च दिन रविवार को प्रातः 8 बजे से 10 बजे यज्ञ हवन एवं प्रवचन हुआ। आर्य समाज के सभी सदस्यों ने बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। आर्य समाज के अन्तरंग सदस्य श्री नरेन्द्र वर्मा जी जिनके बेटे का अभी विवाह हुआ है। श्री सतवीर जी एवं उनकी पत्नी दोनों ने यजमान पद को सुशोभित किया। इस कार्यक्रम में पं० योग राज शास्त्री जी ने ऋषि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने स्त्रीजाति, शुद्रोद्धार एवं शिक्षा पर अधिक बल दिया। आज उनकी बदौलत महिलाएँ बड़े-बड़े उद्योगों पर कार्य कर रही हैं, इस अवसर पर आर्यसमाज में चल रहे आर.वी. प्राईमरी स्कूल के बच्चे सभी अध्यापक वर्ग उपस्थित थे। इस अवसर आर्यसमाज के प्रधान डा० जगदीश गान्धी, कार्यकर्ता प्रधाना श्रीमती विनोद गान्धी, श्री संजय कुमार जी, श्री मनोहर लाल जी, श्री संदीप भगत जी, श्री आर०पी० गोयल, श्री कमलजीत जी, श्री रमेश भगत, श्री धर्मपाल भगत कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र वर्मा जी, श्री तिलकराज जी, श्री मुनीष मदान जी एवं इसके अतिरिक्त और भी कई माताए, बहन, भाई एवं बच्चों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई शान्ति पाठ के प्रसाद वितरण किया गया। दोपहर 1 बजे से 4 बजे तक ऋषि लंगर चलता रहा। जिस का प्रबन्ध सभी आर्य समाज के सदस्यों ने किया। सायंकालीन छः बजे-40 किलो लड्डू प्रसाद भी बांटा गया। इस प्रकार सारा दिन कार्यक्रम चलता रहा। इस कार्यक्रम के पश्चात आर्यसमाज के प्रधान डा० जगदीश गान्धी जी ने सब का धन्यवाद किया एवं यह भी सन्देश दिया कि हम सब को मिलकर इसी प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन आर्यसमाज में समय पर करना चाहिए, तभी आर्यसमाज उन्नति कर सकता है।

-महामन्त्री जनकराज भगत

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।